पूरुषके पहिचान दिलाबैमे नारीके अहम भूमिका



श्याम सुन्दर सुतिहार

अपन समाजके कोना घरमे बेटीके जनम हेलासे अपसगुण आर घृणा करल जाय हैय । एकाईसौ शताब्दीमे चल रहल समाज एखनियो घरमे पहिलका बारे बेटा जन्म भेलापर भोज भतेर मनावल जाय है । वहे जगह वेटीके जन्म भेलासे ‘घरमे लक्ष्मी’ के आगमन होयल हैय कहल जाय है लेकिन मनमे वेटा हवैके इच्छा दवाके छोटमोट भोजभतेर आर विधी विधान करल जाय है । जब कि इ समाजके थाहा नहय नारी हि इ श्रृष्टीके नारी ही चालव हैय ।

ऐखनियो तक देखल जाय त समाजमे नारी अथार्त(बेटी) अपने घरमे ही अपन भाईसब जयसन खुला रुपम घुमैल, लगवैलल, पढैल, अपन मनके आवश्यकता परा करैल एखनियो बंचित हैय । नारीके पढाके कोनो फाईदा नहैय उत विवाह कैरके दोसरके घर जाइके ही पडी बरु वढाईके खचर् दहेजमे देवाके सेहो सोच हैय ।

बेटा बढत त घर चलावत आर बुढापामे कमाके खुवाइत लेखिन बेटीके पढाके कोनो फाईदा न हय विचार धाराके लोग समाजमे वहुत हैय । उ समाजके लोग सबके कि थाहा एकटा नारी विवाह भेलाके वाद तव ओकर काँधमे कते जिम्मेवारी पड है । नारी नहियरमे माय–बाप, समाजके भद्र भलादमीसे जे सिखल हैय वहे अनुसारके व्यवहार करैत । जे समाजमे विहा भेल है ओते के रितीरिजा अपनावैत अपन पतिके पहिचान दिलावैक लेल मरते दमतम पतिके साथ लगल रहै हैय ।

एगो नारी नहियरके सम्पूणर् धन, सम्पति, परिवार, माय–बाप, नाता–गोता रिस्तेदार छोइडके सोसरालमे अपन सम्पतिके रुपमे पति आर बाल–बच्चाके हि अपन गहनाके रुपमे धारण कैरके रह हैय ।

माईवाप पढल लिखल विदुवान होय या पट मुखर् है लेकिन अपन बालबच्चाके लेल पहिलका गुरु माई–वाप ही हैय । माई–बाप जैयसन सस्कार दैत हैय बालबच्चा वहीना सिखत हैय । बालबच्चाके कुछ वेला से सब सेव बेसी दुख आर कुछ समाजमे उदाहरणीय काम कायलासे सवबे बडका सुख माईवापसे दोसर केकरो नय होय हैय ।

ऐखैनिका कलियुग के (स्वाथीर्) दुनियाँमे पनि आर बालबच्चाके निस्वाथर् भावना से प्रेम माय मात्रे कर हैय । अपना भुखे रहिके बालबच्चाके पेट भरैवाला माय, बच्चा कानैक घडी चूप करैवाला माई, बच्चाके प्रश्न के उत्तर दै वाला माय, सास–ससुर लगायके परिवारमे गाइर खाइके बालबच्चाके मिठ हसि दै वाला माय, शहनशीलताके खानी माय भगवान सेभी उपरा है । भगवानके खोजे वडत लेकिन भगवानके अवतारमे घरमे ही माय है । सम्पूणर् माय के सादर प्रणाम करै हिय ।

नारी शकि्त कहल जाय त बहुरुपी आर शकि्तशाली स्वरुप हैय । जकर माध्यमसे पुरा श्रृष्टी चल हैय । आर देखल जायत पदार्के भितर रहिके पुरुषके अगा वढाके सपना सकार करैवाला नारी ही हैय ।

एखैनका युगमे त एगो सिक्का(डलर) के दुईगो पाट है नारी आर पुरुष नयाँ यूगमे नारी पुरुषमे कोनो भेदभान करैल नय मिल हैय । लेखिन एखैन कुछ प्रतिशत महिला सव शिक्षा, दिक्षा, सामाजिक काममे अगा वढल हैय लेखिन वहुत नारी शिक्षा से वनि्चत भक चुल्हा चौका आर घरके चार दिवारीमे रहैके वाध्य हैय । समाज एखनियो समाजमे नारीके सकारात्मक रुपमे ग्रहण करैल नय सक हैय ।

‘पूरुषके पहिचान दिलाबैमे नारीके अहम भूमिका’ जोडैले चाहब लक्ष्मीपुर सिरहा निवासी ऐखैन विराटनगर महानगर पालिका वडा नं. १२ पंचालीमे घर रहल वृहत मधेश नागरिक समाजके अध्यक्ष सुयर्नाथ प्रसाद सिंहके पत्नी स्वगर्य विलटी सिंहके । बिलटीके अथर् एकदम छोट साय वहे करणसे भगवान ओकर विवाह छोटे उमेरमे अथार्त ५ वषर्के उमेर सुयर्नाथ प्रसाद सिंहके साथ भेल रहल । बचपनमे विहा भेल कारण बचपनेमे पति, सासससुर आर घर परिवारके जिम्मेवारी सेहो १२ वषर्के उमेरमे लियके पडल, आर पतिके पढाई लिखाईमे सेहो साथ रहल । अपले मात्र साक्षर भक पतिके पढाई लिखाइमे साथ देते पति सिहंके सरकारी जागिर सेहो लगल ।

सिंह सरकारी जागिरमे व्यस्त भेलाके कारण वेटा–बेटीके जिम्मेवारी सेहो बिलटी सिंहके काँधमे रहल ओ जिम्मेवारीके निभवैत वेटा वेटीमे कोनो भेदभाव नै कैरकै शिक्षा दिक्षा दके ऐखैन कोई वेटा डाक्टर हैय कोइ वेटा इनि्जनियर आर वेटी सेहो डाक्टर हैय । और पोतापोनी–नाती–नातिनीमे सेहो कोनो भेद भाव नैय कैरके सबके शिक्षा दक पेशामे लगावैकै गृहणी भक सहयोग करलक ।

निडर स्वभाव, मिलनसार, दयालु, गरीब दुःखीके सहयोगी, मिलनसार भेलाके कारण स्वगर्य बिलटी सिंह नेपालके ७७ जिल्ला घुमैके सौभाग्य प्राप्त करैत भारत, रसिया, आदि देशके सेहो भ्रमण करैके मौका पाउलक ।

वहिना पति सुयर्नाथ प्रसाद सिंह राजनीतिसे जुड भेलके कारण मधेश आन्दोल २०६३ सालके समयमे दजर्नौ आन्दोलन कारीके घरमे रैखके खानपिन करवाना शहनशीताले मधेश आन्दोलके वारेमे सम्झाना ओर हौसला दक पतिके पहिचानके लेल घरके चार दिवारीसे हि अपन भूमिका निभाक अपन पहिचान के गौन वनाके अपन पतिके पहिचानके अगा वढउलक । बिलटी सिंह परिवारके साथ दैत–दैत अपने २०७८ साल अगहन ९ गते देहवासन भेल ओकर देहवासन पर हादिर्क श्रद्धाञ्जली अपणर् करे चाहव । कि एै सन पति ऐसन माई, एैसन दादी एैसन नानी सबके घरमे होय ।

पति सुयर्नाथ प्रसाद सिंह कहल अगर अमर जीवन मे बिलटीके अगमन नय होयत त सायद हम यी स्थानमे नय रहती । हमर जीवनमे जते काम सफल भेल बिलटीके कारल भेल है ओकर लेल बिलटी स्वगर्वास होयतो भी हमर हृदयमे बास करहल है वताउलक ।

ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्ण्

